Peer Reviewed

ISSN 2454-8332

IMPACT FACTS

Quarterly- Vol.7 • Issue 4 • 15 July. - 14 Oct 2022 • Rs.100/-

International
Interdisciplinary Multilingual Research Journal

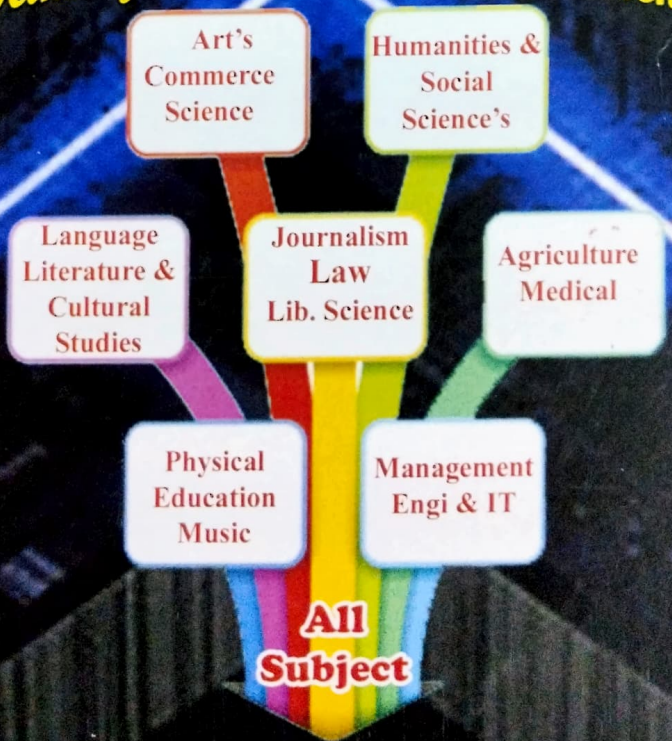

Editor
Dr.Kailas G.Kaninde

पुर्व पाषाण युगीन मानवी जीवन

प्रा.डॉ. वसंत कदम
इतिहास विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

इतिहास मानव जीवन के कार्य पद्धती की क्रमबद्ध रचना है | पुरातत्त्ववेताओं के मतानुसार ईस धरतीपर मनुष्य का जन्म साडे सतरा लाख वर्षपुर्व हुआ | उनमें से बहुत अल्प कालखंड की क्रमबद्ध रचना होती हुई दिखाई देती है | मनुष्य की कार्य पद्धती के इतिहास की रचना विविध उपलब्ध साधनों के आधार पर कालानुरूप की गई ऐसा प्रतित होता है | परंतु संबंध मानव जाती का इतिहास प्रथम दो भागो में विभाजीत किया जा सकता है | एक प्रागऐतिहासीक कालखंड और दुसरा ऐतिहासीक कालखंड जीस कालखंड में मानव को लेखन का परिचय ज्ञात नही था ऊस कालखंड को प्रागऐतिहासीक कालखंड माना जाता है और जीस कालखंड में मानवने लेखन कला अवगत की ऊस काल को ऐतिहासीक युग का कालखंड माना जाता है |

आज से सात हजार वर्षपुर्व मानव ने लेखन कला ज्ञात की ईस कारण ऐतिहासीक युग से प्रागऐतिहासीक युग कितना ब्रहत है | इसकी कल्पना की जासकती है | प्रागऐतिहासीक युग में विविध पुरात्तत्विय साधनों के आधार पर मनुष्य के कृतुत्व का विभाजन विविध युगानुरूप किया गया है | जीसने शुरूवाती दौर में या प्रारंभिक काल में पाषाण युग था इस युग में मानव के अस्तित्व की जानकारी पत्थरों के हत्यारों से मिलती है | पत्थर ही उनके जीवन का अविभाज्य घटक था | इसीलिए इस युग को पाषाण युग कहा जाता है | पाषाण युगीन मानवने जो विकासात्मक प्रगती की उस कारण पाषाण युग को तीन भागो में विभाजीत किया गया है | पुर्व पाषाण, मध्य पाषाण और उत्तर पाषाण प्रस्तुत लेख में पुर्व पाषाण युग या कालखंड का अध्ययन किया गया है |

पुर्वपाषाण युग :-

सर्व प्रथम सन १९६२ में पुरातत्त्वीय संशोधक ब्रुस फुट महोदयने पुर्व पाषाण युग के विषय में मद्रास में पुरातत्त्वीय साधनों के आधार पर संशोधन को प्रारंभ किया | इस युग के पुरातत्त्वीय भग्न अवशेष आशिया, आफ्रिका, युरोप खंड के विभिन्न प्रदेशो में प्राप्त हुए | इस आधार पर स्टुअर्ट लिगटने यह निष्कर्ष निकाला की विभिन्न प्रदेश में प्राप्त हुये पत्थरों के हथीयार एक समान ही है | भारत में सर्व प्रथम मद्रास के निकट पल्लावरम् तथा महाराष्ट्र में गोदावरी नदी के पठार मे पैठन स्थान पर पुर्व पाषाण युगीन भग्न अवशेष प्राप्त हुऐ साथ ही उनके बाद पंजाब, कश्मीर, हैद्राबाद, म्हैसुर, ओडिसा आदी स्थानोपर भी कुछ प्रमाण में इस युग के अवशेष प्राप्त हुऐ है | उपरयुक्त सभी पुरातत्त्वीय साधनों के आधार पर संशोधक ब्रुस फुटने यह निष्कर्ष निकाला की, यह युग लगभग पाच से छह लक्षपुर्वक होगा |

१) पुर्व पाषाण युगीन मानव

पुर्व पाषाण युगीन मानव के विषय में कोई निश्चत या निर्धारीत मत स्पष्ट नही है | क्यों की, दुर्भाग्य से इस काल के मनुष्य कोई अस्थिपंजर उपलब्ध नहीं हुआ परंतु विश्व के अन्य प्रदेशों में जो मानव के अस्थिपंजर प्राप्त हुऐ उनके आधार पर पुरातत्त्वीय संशोधक पिंगट ने यह निष्कर्ष निकाला की, पुर्वपाषाण युगीन कालखंड के मानव का कपाल तथा जबडा माकड (बंदर) जैसा था | उस का रंग काला था, बाल उनी और चपटी होती थी और उस मानव की उंचाई कम थी |

२) पुर्व पाषाण युगीन निवास

शिवालिक पर्वत, पंजाब और जम्मु-काश्मीर आदी ठीकाणोंपर पाषाण युगीन निवास या घरों के अवशेष प्राप्त हुए है | अधिक अधिक संशोधकों के मतानुसार इस युग का मानव दक्षिण भारत में ही निवास करता था इस युग में भरपूर मात्रा में भौगोलिक परिवर्तन हुऐ | बर्फवृष्टी, अतिवृष्टी, भयंकर वन्य पशु और हिंसक प्राणीओं से सुरक्षितता के कारण उस युग के मानवने भी उस पद्धतीनुरूप निवास स्थान निर्माण किए थे ऐसा प्रतित होता है | प्रारंभ में उस युग के मानवने वृक्ष का आश्रय लिया होगा पर आगे चलकर मात्र उन्होने पर्वतों को गुंफानुमा आकार देकर उसमे वास्तव्य किया होगा | ऐसा प्राप्त हुये भग्न अवशेषोंसे प्रतीत होता है |

३) पुर्व पाषाण युगीन वस्त्र

पुर्व पाषाण युगीन मानव का जीवन जंगली ही होगा | यह निश्चत कहा न जा सकता है की, इस युगीन मानवओंने कभी वस्त्र का उपयोग किया या नग्न अवस्था में रहे परंतु यह कह जा सकता है की, ये लोग वृक्ष के पत्ते उस की छाल और अन्य पशुओं के चमडोंसे अपने शरिर को आच्छादित रखते थे और वर्षा, शित आदीसे अपनी रक्षा रखते थे क्योंकि उस काल में यह चींजे उपलब्ध थी |

४) पुर्व पाषाण युगीन औजारे

इस युग के मानव अपने सभी प्रकार के हत्यार पत्थर के ही बनाते थे | कठीण से कठीण पत्थरों को काटकर आवश्यतानुसार भिन्न-भिन्न आकार के शस्त्र का हत्यार बनाते थे उस पत्थरों की औजार के सहाय्यता से वे अन्य पशुओं का शिकार किया करते थे | उनके जादा औजार बेल्लोर नाम पत्थर के बनाऐ हुऐ थे इसलिए संशोधन कर्ताओंने इस युग को बेल्लौर युग भी कहां है |

५) आहार और विज्ञान का बिजारोपन

संशोधन कर्ताओ के मतानुसार विज्ञान की उत्पत्ती या निर्मोती पुर्व पाषाण युगमें ही हुई प्रारंभी युग में मनुष्य के सामने यह प्रश्न निर्माण हुआ होगा की क्या खाऐ ? कौनसा अन, फल, भाजी और किस प्राणी का मौंस खाया जाए ? प्रत्येक प्राणी की के वृत्ती का अभ्यास उस मनुष्योंने निश्चित रूपसे किया होगा | किस प्राणी की हत्या, शिकार किस ऋतु में किया जाय, कौनसा फल और कौनसा कंदमुल का सेवन किस ऋतु में किया जाए |

इन सारी बातोंसे सह प्रतीत होत है की, पशु विज्ञान, जल, वायु, तथा जोतिष विज्ञान का बिजारोपन सही अर्थोमें पुर्व पाषाण युग में ही हुआ होगा इस विचार को गार्डन चाईल्ड के लेख से अधिक पुष्टी मिलती है |

६) शव विसर्जन

कतिपथ विद्वानों की धारणा है की, पुर्व पाषाण युगीन लोग मृत शरिर को गुड्डा करकर गाढ दिया करते थे | कभी कभी वे मृत शरिर को लाल रंग लगा ते थे उन्हे ऐसा लगता था की, लाल रंग लगाने से रक्तहीन मनुष्य के शरीर फिरसे जान आ सक्ती है या मनुष्य का शरीर जीवीत हो सक्ता है | साथ ही इस युग के लोग मृत शरीरी को प्रारंभी फेक दिया करते और उस शरीर को पशु-पक्षी खा जाने के बाद बाकी बच्ची अस्थीयों को जमीन में गाढ देते यह प्रथा आगे चलकर हडप्पा और सिंधू सभ्यता में भी चालू थी |

७) आभुषणे

इस काल के प्राप्त अनेक आभूषणोंसे पता चलता है की, उस कालखंड के लोगों को आभुषणों का परिचय था | आभुषणों की उन्हे रुची भी थी इसीलिए वे कौडी, शंख तथा पशुओं के दाँत द्वारा निर्माण किए गए अलंकारी आभुषणों का प्रयोग करते थे | और आपने शरीर को अलंकृत करते थे |

निष्कर्ष :

मानव का जन्म इस धरतीपर लाखो वर्ष पुर्व हुआ | मानव का प्रारंभी युग अत्यंत कठीण स्वरुप का था | उन्हे हजारों वर्ष अत्यंत बीकट तथा प्रतिकुल परिस्थिती में संघर्षपूर्ण जीवन जीना पडा | ऐसे अंध:कार युग में भी तत्कालीन मानवने अपने बुद्धी के बल पर नए नए संशोधन किए और आपने सहासी अनुभवों के साथ वैज्ञानिक घटकों का बिजारोपना किया |

संदर्भ सुची :-

१. पाण्डेय श्रीनेत्र., प्राचीन भारत का इतिहास, इलाहबाद- लोकभारती प्रकाशन, १९६४
२. डॉ.लाल गुप्त माणिक., भारतीय संस्कृती का इतिहास, कानपुर-साहित्य रत्नालय गिलिश बाजार.
३. डॉ.आचार्य प्र.अं/प्रा.केशेट्टीवार के.मु.,नागपूर विद्याप्रकाशन जुन १९८८
४. डॉ.कठारे अनिल., प्राचीन भारत, नांदेड कल्पना प्रकाशन-द्वि.आ.जुलै-२००१